श्रीकृष्ण के अवतार काल में ब्रज में वे सब गोपी बनकर आए थे जिन्होंने पूर्व जन्मों में माधुर्य भाव से साधना कर रास में सम्मिलित होने का अधिकार प्राप्त कर लिया था। कई प्रकार की गोपियाँ थी। एक तो वे जो अनादि काल से कभी माया के प्रभाव में रही ही नही, जैसे ललिता, विशाखा आदि। दूसरे वे जो अनादि काल से माया के प्रभाव में थी लेकिन साधना कर एक दिन गोलोक गयी थी। ये दोनों प्रकार की गोपियाँ गोलोक से आयी थी। थर्ड क्लास की गोपिया वेद की ऋचाएँ थी। तथा अन्य गोपियाँ वे थी जो पहली बार रास के रस का आस्वादन करने जा रही थी। दंडकारण्य के ऋषी मुनी थे जो भगवान राम की ओर काम भाव से आकर्षित हुए थे। उन्हे भगवान राम ने कृष्णावतार में इच्छापूर्ती का वरदान दिया था। अग्निपुत्र थे। जनकपुर की सीता की सेविकाएँ थी। ये सब गोपी बन बन कर आये थे।

रास के एक साल पूर्व गोपियों ने श्रीकृष्ण को पती रूप में पाने की इच्छा से कात्यायनी व्रत रखा था। उस समय तथा चीरहरण के प्रसंग में गोपियों को श्रीकृष्ण ने ब्रम्ह रात्रियों में महारास का वरदान भी दिया था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यहा ये समझना महत्वपूर्ण है कि ईश्वरीय जगत की हरएक चीज चेतन होती है। वहा जड माया का प्रवेश नही है। वहा की धरती, आकाश श्रीकृष्ण खुद बने है। इसलिए वहा की धूल में भी वही आनंद मिलता है जो श्रीकृष्ण में है।

श्रीकृष्ण और उनकी सहयोगी गोपियों द्वारा इस पृथ्वी पर इस दिव्य महारास का प्रदर्शन इसलिए किया गया की माया के प्रभाव में रहने वाले जीवों के मन में ये विश्वास पैदा हो कि भगवान हमसे भी प्यार करेंगे तथा हम भी एक दिन रास रस का आस्वादन कर सकेंगे।

एक साल बाद वो रात्रियाँ श्रीकृष्ण के सामने प्रकट हो गयी और

याद दिलाया कि आपने गोपियों को एक साल पूर्व रास का वरदान दिया था। ये रात्रियाँ ब्रम्हा के एक दिन के बराबर थी। जिसकी कालावधी चार अरब साल से भी अधिक होती है। श्रीकृष्ण ने कहा हा दिया तो था। तब श्रीकृष्ण ने सर्व प्रथम मन बनाया और सोचने लगे कि अब रास का प्रबंध कैसे हो?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132